ओम शान्ति

रक्षाबन्धन के पावन पर्व की ढेर सारी बधाइंया

मर्यादाओं के सागर, अपनी शक्तियों से निरन्तर मर्यादा पुरूषोत्तम बनाने वाले परमपिता परमात्मा की प्रिय संतान दैवी भ्राता/बहिन.....।

पावन रक्षाबन्धन की हार्दिक बधाई स्वीकार किजिए।

रक्षाबन्धन का महत्व प्राचीन काल से चला आ रहा है। यह प्रत्येक भाई-बहन के आत्म रक्षा की मर्यादा का प्रतीक रहा है। रक्षाबन्धन के दिन कलाई में बांधा जाने वाला मुलायम धागा यूँ तो पतला होता है। परन्तु उसमें इतनी शक्ति होती है कि वह मर्यादाओं में इतनी मजबूती से बांध देता है कि मनुष्य मर्यादा पुरूषोत्तम बन जाता है। इस धागा की शक्ति यही समाप्त नहीं हो जाती बल्कि मनुष्य के अन्दर आसुरी वृत्तियों को समाप्त कर दैवी शक्तियों के संचार करने की शक्ति प्रदान करता है। परमात्मा भी यही कहते है कि यदि सभी आत्मायें पवित्रता, सदभावना, दया के बन्धन में बंध जायें तो तुम्हारी दृष्टि से पवित्रता, आपसी प्रेम और विश्व बन्धुत्व की वरसात होने लगेगी और इस संसार से अज्ञानता, आसुरीयता, दंगा, फसाद, अत्याचार और अनाचार मिट जायेगा। संसार में प्रत्येक नर, नारी, पशु, पक्षी प्रकृति सुरक्षित और सुखदायी हो जायेंगे।

सर्व मनुष्यात्माओं के परमपिता परमात्मा शिव के निर्देशन में संचालित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस वर्ष को 'परमात्म शक्तियों की अनुभूति वर्ष' के रूप में मना रही है। संसार से आसुरीयता को सिर्फ ईश्वरीय शक्तियों के सहारे ही समाप्त किया जा सकता है।टूटते मानवीय रिश्तों को आपसी प्रेम, मर्यादा और सद्भावना के मजबूत डोर में बांधा जा सकता है।

तो आईये परमात्मा की संतान सर्व भाई-बहनों को मर्यादा और पवित्रता की डोर में बांधने वाले रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर राखी के धागे को कलाई में बांध स्नेहिल पुष्पों, आत्मस्मृति और विजय का तिलक लगाकर स्वयं को सुख-शान्ति के पथ पर अग्रसर करें तथा स्नेह, सहयोग, परोपकार की सौगात भी दें। साथ-साथ सदैव मीठे बचन की मिठाई खिलाते हुए मानवीय रिश्तों को मजबूत करें।

भेजती हूँ रक्षाबन्धन आपके नाम से।
ईश्वर आपकी रक्षा करेंगे आकर परधाम से।।
इसकी कीमत न चुकाइये स्थूल दाम से।
दिव्य बनाइये जीवन को ईश्वरीय वरदान से।।

सेवाकेन्द्र का पता

ईश्वरीय सेवा में
आपकी दैवी बहन